जागरूकता के कारण विकास के तीन आधार स्तंभ तैयार किए गए हैं। शासन की नीति, प्रशासन की कृति और समाज के स्वयं की पहल। देश के हर हिस्से में ऐसा होना चाहिए। हम देश में प्रवास के दौरान लोगों से कहते हैं कि जाओ चित्रकूट में देखकर आओ। चित्रकूट को देखकर भारत में कई संस्थान ऐसा काम करने के लिए खड़े होने लगे हैं। अब हम विदेशियों को भी कह सकते हैं कि हमारे विकास की कल्पना ज़्या है? ज़्योंकि दुनिया को भी इस एकात्म समग्र दृष्टि की जरूरत है। हमारे काम में एक गुप्त शज़्ति भी है। जो सामने नहीं आती। वह हमारा आत्मविश्वास है। हम जो अभी कर रहे हैं, उसे बिना रूके, बिना थके तब तक करते रहना है, जब तक नर का नारायण